मजदूरों का अपना कोई देश नहीं होता । दुनिया के मजदूरो, एक हो !

फरीदाबाद मजदूर समाचार

मजदूरों की मुक्ति खुद मजदूरों का काम है। दुनिया को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा ।

RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73

नई सीरीज नम्बर 17 नवम्बर 1989 50 पैसे

किसकी दिवाली, किसका दशहरा

आज से ढाई-तीन हजार साल पहले भारतीय उपमहाद्वीप के कई हिस्सों में स्वामी समाज व्यवस्था का बोलबाला था । पशुपालन पर टिकी उस व्यवस्था में मेहनत दासों को करनी पड़ती थी । दासों के खून-पसीने पर स्वामी मौज उड़ाते थे ।

गो-धन को सर्वोत्तम धन मानने वाला वह समाज पुरुषप्रधान भी था । स्वामी समाज में गऊओं, दासों और स्त्रियों के लिये स्वामी आपस में युद्ध करते थे ।

कथा के मुताबिक राम एक स्वामी था । स्वामी राम को अपने विवाह में सैंकड़ों दास-दासियाँ देहज में मिली थी । रावण भी एक स्वामी था जिसके दास-दासियों की भरमार थी । स्वामी राम और स्वामी रावण के युद्ध की कहानी जानी-पहचानी है ।

और, आज जैसे मजदूर पूंजीवादी दमन-शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हैं, वैसे ही उस समय दास भी स्वामियों के दमन-शोषण के खिलाफ संघर्ष करते थे । जैसे आज मजदूरों को उल्लू बनाने के लिये पूंजीवादी प्रचार तथा दबाने के लिये पुलिस-फौज है, वैसे ही उस समय दासों को बेवकूफ बनाने के लिए शास्त्र रचने वाले ऋषि-महर्षि थे तथा शस्त्रों पर स्वामियों का एकाधिकार था ।

तो फिर, स्वामी रावण पर स्वामी राम की जीत हो चाहे स्वामी राम का अयोध्या लौटना हो, मजदूरों द्वारा उन्हें त्यौहार के तौर पर मनाने की क्या तुक है ?

और, स्वामी राम कहाँ पैदा हुआ तथा कहाँ मरा, इससे मजदूरों का भला क्या लेना-देना ?

× × ×

* अमरीका में पिट्टस्टन कम्पनी के एक हड़ताली कोयला खदान मजदूर ने कहा, "यहाँ केन्द्र सरकार के पुलिस अफसर हड़ताल तोड़कों को खदान में ले जा रहे हैं और हमारे हर कदम की निगरानी रख रहे हैं । अखबारों में हम पढ़ते हैं कि राष्ट्रपति बुश जब पोलैंड और हंगेरी गये थे तब वे वहाँ स्वतन्त्र यूनियनों की आवश्यकता की वकालत कर रहे थे । इस देश में मजदूरों के लिये कुछ स्वतन्त्रता की क्यों नहीं कहते ? रोटी-कपड़ा-मकान और कुछ स्वतन्त्रता के लिये रूस में कोयला खदान मजदूरों की हड़ताल के बारे में हम यहाँ के अखबारों में पढ़ते हैं । बिलकुल उन्हीं चीजों के लिये तो हम यहाँ अमरीका में हड़ताल पर हैं । पर इस हड़ताल के बारे में कोई अखबार चर्चा नहीं करता । और कोई भी अखबार यहाँ कायम पुलिस राज के बारे में कुछ नहीं कहता ।" [सामग्री हमने न्यूज एन्ड लैटर्स पत्रिका के अगस्त-सितम्बर 89 अंक से ली है ।]

पूंजीवादी चुनाव और मजदूर

मजदूरों की मजदूरों से अपील

साथी मजदूरो,

वोटों का बड़ा दंगल एक बार फिर हमारे सामने है । पोस्टर-लाउडस्पीकर-जीप-कार-बोतल-मुर्गों की डुगडुगी बजने लगी है । हिन्दु-मुस्लिम-सिख-इसाई-जाट-गूजर-चमार-धानक-मीणा-भील-पंडत-ठाकुर-रुपये-टकों के नगाड़े दमदमाने लगे हैं । वोटों के इस खेल में शामिल लोग एक-दूसरे की बेइमानी-हेराफेरी-चोरी-डकैती-बदमाशी का जोर-शोर से प्रचार कर रहे हैं । ऐसे में हम मजदूरों को क्या करना चाहिये ?

साथियो, पहली बात तो यह है कि हमारी चमड़ी उतारने में लगे बहुरूपियों के ड्रामे में हमें तमाशबीन बनकर ताली बजाने वाले नहीं बनना चाहिये । पचास साल से चल रहे इस नाटक से आगे ही हम काफी उल्लू बन चुके हैं, आओ और बेवकूफ न बनें ।

देखो, 29 अप्रैल को हरियाणा के मुख्यमन्त्री ने घोषणा की थी कि यहां मजदूरों का कम से कम वेतन 800 रुपये महीना होगा । इस पर एटक, सीटू, बी एम एस, एच एम एस, एल एम एस और बैंक इम्पलाईज फैडरेशन ने 13 जून को प्याली फैक्ट्री के सामने मैदान में मुख्यमन्त्री देवी लाल का अभिनन्दन किया था । वहाँ इस मुख्यमन्त्री को मजदूरों का मसीहा बताया गया था । ट्रेड यूनियन लीडरों ने श्री देवी लाल के लाल, हरी और पीली पगड़ियाँ बाँधी थी । पहली मई से 800 लागू करने की घोषणा थी पर नवम्बर आ गया है और अभी भी फरीदाबाद में हजारों मजदूरों को तीन-चार-पाँच सौ रुपये महीना में खटना पड़ रहा है ।

और देखो चालीस साल से गरीबी दूर कर रहे कांग्रेसी राज में हमारी गरीबी दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ी है ।

साथियो, कुर्सी हथिया कर कौन ज्यादा लूटे के लिये मची इस चुनावी दंगल में हम मजदूरों को मूसलचन्द बनना चाहिये । वोट माँगने आने वालों के मुंह पर उनके पिछले आश्वासनों को फेंक कर मारो और अपने हितों के लिये संघर्ष तेज करो । साँपनाथ, नागनाथ और उनकी औलादों को दूध मत पिलाओ । यह नाग हमें ही डसने वाले हैं ।

वोटों की नहीं, अपने हितों की बात करो !

मुहम्मद शरीफ (थॉमसन प्रेस); राम आसरे (मोटरन इन्डस्ट्रीज); बाबु पी एस (सुपर एलाय कास्ट); भगवान दास (इलैक्ट्रोनिक्स); राम सेवक (प्रकाश एग्रो); दिनेश (यूनिक रबड़); रामकुमार (न्यू इंडिया कन्ड्युट पाइप); त्रिलोकी नाथ (एस एस ई डी); मेवा लाल सागर (यूनिवर्सल इंजीनियरिंग); रामरूप (सिराको स्प्रिंग्स); राधेश्याम (शक्ति इन्टरप्राइजेज); ब्रह्मदेव (बेलमोन्ट रबड़); विक्रम सिंह (भोगल्स स्पोर्ट्स); छोटे लाल शर्मा (अग्रवाल फाउन्ड्री); राजाराम (मोनु वुड वर्क्स); हरिलाल यादव (सोवरिन निटवर्क्स); तेज प्रसाद (सिसौदिया इंजीनियरिंग); बन्सी लाल (स्पन पाइप); राजदेव (जनक प्लास्टिक); मोहन झा (परफैक्ट पैक); ए बी एम गुप्ता (ओसवाल स्टील); शिवचन्द यादव (अमर आटो); गुरु चरन राम (सपना टैक्सटाइल); राम अनूप मौर्य (भारत कार्बन); विद्या सागर-शिव मन्दिर राम (बम्पी रबड़); बनवारी-मदन सिंह (केल्विनेटर); नरायन-मुकेश (विश्वकर्मा इन्टरप्राइजेज); दूधनाथ-रामफल (बाटा); राजेन्द्र प्रसाद-राम विनोद पान्डेय-शिव कुमार (आटोपिन); विनोद कुमार-रामेश्वर यादव-बदन (हिन्दुस्तान वायर); सुरेश बहादुर-राममिलन-इन्द्रजीत-सतेन्द्र कुमार (लखानी); रामबदन-चन्द्रभान सिंह-त्रिलोकी-हरिलाल-भूपेन्द्र सिंह (झालानी टूल्स); पाँचूराम-रामजीत-राधेश्याम बरई-हरीराम बरई-राम सुरेश बरई (सूपर फाइबर); रामनायक-श्याम लाल-रामकरण वर्मा-फूलचन्द-त्रिभुवन सिंह-बाबूराम-राम सवारे-गंगाप्रसाद-प्रताप सिंह-विश्वनाथ-मनीराम-मिर्जा सिंह-रामलखन-पातीराम-राजेन्द्र-हरगोविन्द-जानकी प्रसाद-राजेन्द्र सिंह-सुरेन्द्र बहादुर-सुदीन राम-विजय बहादुर-रामसूरत-भृगुनाथ सिंह-लालचन्द-देवनाथ-मोहनलाल-शिवनाथ-रामलौटन-शीतलाप्रसाद-रूपनारायण सिंह-जयराम-ओम प्रकाश यादव-लालचन्द यादव-श्यामराज-रोहिताश कुमार-भिखारी-रामदौर-तोताराम-परशुराम-रामकिशोर-रामचन्दर-दशरथ पान्डेय-अच्छेलाल-गयादीन-ओमप्रकाश-कन्हैया लाल यादव-रामप्रताप-मंशाराम-सीताराम यादव-रामायादव-हंसराज गब्बुलाल-लालमन-राधेश्याम-रामधारी मौर्य-मुआल प्रसाद-रामप्रकाश-प्रवेश प्रसाद-राजाराम-रोजन सिंह-सुदर्शन सिंह-सुग्रीव-फौजदार-रामअवतार-रामकुमार-भूपण यादव-अमला यादव-सिद्धनाथ-रामसागर [ईस्ट इंडिया कॉटन]

26 अक्टूबर 1989

सम्पर्क—मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, बाटा चौक के पास, फरीदाबाद-121001

हमारे लक्ष्य हैं—1. मौजूदा व्यवस्था को बदलने के लिए इसे समझने की कोशिशें करना और प्राप्त समझ को ज्यादा से ज्यादा मजदूरों तक पहुँचाने के प्रयास करना । 2. पूंजीवाद को दफनाने के लिए जरूरी दुनिया के मजदूरों की एकता के लिए काम करना और इसके लिए आवश्यक विश्व कम्युनिस्ट पार्टी बनाने के काम में हाथ बँटाना । 3. भारत में मजदूरों का क्रान्तिकारी संगठन बनाने के लिए काम करना । 4. फरीदाबाद में मजदूर पक्ष को उभारने के लिए काम करना ।

समझ, संगठन और संघर्ष की राह पर मजदूर आन्दोलन को आगे बढ़ाने के इच्छुक लोगों को तालमेल के लिए हमारा खुला निमन्त्रण है । बातचीत के लिए बेझिझक मिलें । टीका-टिप्पणी का स्वागत है—सब पत्रों के उत्तर देने के हम प्रयास करेंगे ।

दनिया में मजदूरों के संघर्ष

कनाडा

पूँजीवादी व्यवस्था का संकट गहरा रहा है। अपनी व्यवस्था के संकट का बोझ पूंजी के नुमाइन्दे जगह-जगह मजदूरों पर थोप रहे हैं। जिन इलाकों को अब तक स्वर्ग प्रचारित किया गया है वहाँ भी मजदूरों की छँटनी हो रही है, वेतन घटाये जा रहे हैं और वर्क लोड बढाया जा रहा है। अपने ऊपर बढ रहे पूँजीवादी हमलों के खिलाफ पूंजीवादी स्वर्गों में भी जगह-जगह मजदूर संघर्ष कर रहे हैं। हाल ही की अमरीका में कोयला खदान मजदूरों-एयरलाइन वर्करों-मीट पैकिंग मजदूरों की हड़तालें, इंगलैंड में रेलवे वर्करों-गोदी मजदूरों-तेल कुओं के कामगारों-बी बी सी वर्करों की हड़तालें, रूस में कोयला खदान मजदूरों-ट्रान्सपोर्ट वर्करों की हड़तालें ऐसे मजदूर संघर्षों की एक झलक हैं। पूंजीवादी स्वर्ग के तौर पर प्रचारित एक और देश, कनाडा में नर्सों की एक बड़ी हड़ताल की हम यहाँ चर्चा करेंगे।

कई अन्य देशों की ही तरह कनाडा में भी हाल ही के वर्षों में सामाजिक और स्वास्थ्य सेवाओं पर सरकारी खर्चों में बड़े पैमाने पर कटौती की गई है। इन कटौतियों का आम लोगों की सुविधाओं पर असर पड़ने के साथ-ही, इन क्षेत्रों में काम करने वाले वर्करों पर भी बुरा प्रभाव पड़ा है। वर्करों के वेतन कम हुये हैं। कम ध्याड़ी की वजह से ऐसी नौकरियाँ छोड़ने वालों अथवा कम बजट की वजह से हुई छटनी के कारण वर्करों की संख्या घटी है। और, मजदूरों पर काम का बोझ बढा है। इस सब के खिलाफ वर्करों के संघर्ष बढे हैं। कनाडा के ब्रिटिश कोलम्बिया प्रान्त में 13 जून को शुरू हुई 17,500 नर्सों की हड़ताल ऐसा ही एक संघर्ष था।

तीन वर्ष में 18 प्रतिशत वेतन बढाने के मैनेजमेंट के प्रस्ताव के खिलाफ ब्रिटिश कोलम्बिया की 17,500 नर्सों ने विशाल बहुमत से हड़ताल का फैसला किया क्योंकि बढ़ती मँहगाई की वजह से यह 18% वृद्धि वास्तव में उनके वेतन में कटौती थी। नर्सों ने 22 प्रतिशत तत्काल तथा साढ़े सात प्रतिशत दूसरे और इतनी ही तीसरे वर्ष में वेतन वृद्धि की माँग की। साथ ही, नर्सों ने ओवरटाइम वेतन-शिफ्ट अलाउँस-शनिवार व रविवार के वेतन में वृद्धि तथा वर्किंग कंडीशनों में सुधार की माँगें रखी।

इस पर कनाडा सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं को "आवश्यक सेवा" घोषित कर दिया। पूँजीवादी प्रचारतन्त्र ने नर्सों की हड़ताल को "जन स्वास्थ्य को खतरे में डालने वाली" प्रचारित किया। यूनियन ने अस्पतालों की मैनेजमेंट तथा सरकार को "आवश्यक सेवा" बनाये रखने में सहयोग दिया। पूँजीवादी कानूनी पचड़ों और मैनेजमेंट-यूनियन की तिकड़मबाजी से 5,500 नर्सें ही एक समय पर हड़ताल पर रह सकती थी। लेकिन 29,000 नर्स सहायकों-अर्दलियों-क्लर्कों-सफाई करने वालों ने पिकेटिंग करती नर्सों की कतार तोड़कर काम पर जाने से इनकार करके नर्सों का हौसला बढाया। इस पर सरकार ने "आवश्यक सेवा" कानूनों के तहत इनमें से भी 8,000 को काम करने को मजबूर किया। फिर भी 13 जून से शुरू हुई नर्सों की हड़ताल का असर पड़ने लगा और फिर 22 जून से उन 29,000 अस्पताल वर्करों ने भी हड़ताल शुरू कर दी। संघर्ष के इस फैलाव ने मजदूर पक्ष को बहुत मजबूती दी। तब 26 जून को मैनेजमैंट ने तीन साल में नर्सों का वेतन तीस प्रतिशत बढाने का प्रस्ताव पेश किया। यूनियन ने चटपट इसे मानने की घोषणा कर दी पर गुस्से में भरी सैकड़ों नर्सों द्वारा यूनियन के हैड आफिस पर कब्जा कर लेने के बाद यूनियन को अपनी घोषणा वापस लेनी पड़ी।

30 जून को 29,000 अस्पताल वर्करों का मैनेजमेंट से समझौता हो गया। बिना समझौते के 17,500 नर्सों ने भी पहली जुलाई से हड़ताल खत्म कर दी पर नर्सों का गुस्सा सुलगता रहा। इस पर कनाडा सरकार ने 14 अगस्त को जबरन पँच फैसले की धमकी देकर दो साल में तीस प्रतिशत वेतन वृद्धि का निर्णय नर्सों पर थोप दिया।

कनाडा में मजदूर इस संघर्ष से सबक ले रहे हैं। सामाजिक शान्ति के इस किले में 17,500 नर्सों और 29,000 अस्पताल वर्करों की इस हड़ताल ने पूँजीवादी नकाब की एक परत उतार दी है। आने वाले दिनों में कनाडा में मजदूरों के संघर्षों के बढने के संकेत हैं। [सामग्री हमने क्लास स्ट्रगल बुलेटिन से ली है।]

आटोपिन

बेसिक और डी ए में एक भी पैसा बढ़ाये बिना जुलाई में मैनेजमेंट और यूनियन ने तीन साल की एग्रीमेंट पर दस्तखत किये। अलाउन्सों में वृद्धि के जरिये पहले साल में सात प्रतिशत और दूसरे तथा तीसरे वर्ष में दो-दो प्रतिशत की वेतन वृद्धि के बदले में मजदूरों द्वारा तत्काल 25 प्रतिशत प्रोडक्शन बढ़ाने की शर्त तय की गई थी। ऐसी एग्रीमेंट मजदूर मुश्किल से ही मानेंगे, यह जानते हुए मैनेजमेंट ने तिकड़मों का सहारा लिया। मार-पीट का माहौल बनवाकर मैनेजमेंट ने एग्रीमेंट पर चटपट में साइन करवाये। लफड़े को बढ़ाने से बचने की सोच कर आटोपिन के मजदूरों ने इस एग्रीमेंट पर चुप्पी साध ली। इस प्रकार मैनेजमेंट की यह तिकड़म सफल हुई।

यूनियन से दस्तखत करवाना और मजदूरों से बढ़ा हुआ वर्क लोड उठवाना अलग-अलग चीज हैं—यह भी मैनेजमेंटें जानती हैं। इसलिए आटोपिन मैनेजमेंट ने वर्करों पर काम का बोझ बढ़ाने के लिए चुन-चुनकर कदम उठाये। मैनेजमेंट ने पहले रीमर का काम करने वाले मजदूरों को छाँटा। रीमर वालों का गेट रोक कर उन्हें 70 पीस की जगह 105 पीस बनाने का लैटर जबरन थमाया गया। एग्रीमेंट साइन करने के बाद यूनियन ने मजदूरों की कोई मीटिंग नहीं की थी पर यूनियन लीडरों ने बातचीत में वर्करों को बताया था कि 25 प्रतिशत वर्क लोड जहाँ संभव होगा वहीं बढ़ाया जायेगा। पर मैनेजमेंट ने रीमर वर्करों पर पहले झटके में ही 50 प्रतिशत वर्क लोड बढ़ा दिया।

इसके कुछ दिन बाद आटोपिन मैनेजमेंट ने लेलैंड डिपार्टमेंट के मजदूरों को धार पर धरा। मैनेजमेंट ने बकाया तनखा की किश्त रोकने की धमकी देकर 12 की जगह 15 कमानी बनाने, यानि 25 प्रतिशत अधिक वर्कलोड मजदूरों पर थोप दिया।

और अब स्प्रिंग शॉप के वर्करों को आटोपिन मैनेजमेंट ने अपने हमले का निशाना बनाया है। इस डिपार्टमेंट की पहली शिफ्ट के मजदूरों का बोनस रोक कर मैनेजमेंट ने 50 प्रतिशत प्रोडक्शन बढ़ाने के लिए दबाव डाला पर वर्कर नहीं झुके। दूसरी और तीसरी शिफ्ट के वर्करों को बोनस दे दिया गया फिर भी स्प्रिंग शॉप के समस्त मजदूरों ने मैनेजमेंट के हमले के विरोध में दिवाली की मिठाई और बर्तन लेने से इनकार कर दिया।

स्प्रिंग शॉप में अगर आटोपिन मैनेजमेंट सफल हो गई तो आटोपिन के तीन चौथाई वर्करों पर जुलाई के बाद वर्क लोड में 25 प्रतिशत से अधिक वृद्धि हो जायेगी। इसके बाद बचे-खुचे मजदूरों पर काम का बोझ बढ़ाने में मैनेजमेंट को कोई समय नहीं लगेगा।

ऊपर के हवाले से साफ है कि आटोपिन मैनेजमेंट ने टुकड़े-टुकड़े करके मजदूरों पर हमले किये हैं। मैनेजमेंट के हमलों का समस्त वर्करों ने एकजुट हो कर विरोध नहीं किया। इसलिए एक-एक करके वर्करों को दबाने में सफल हो कर आटोपिन मैनेजमेंट अब सब मजदूरों पर वर्क लोड बढ़ाने की स्थिति में पहुँच गई है। ऐसे ही पूंजीवादी हमलों को झेल चुकी मजदूरों की पिछली पीढ़ियों ने इसीलिये "एक पर हमला, सब पर हमला!" को अपना नारा बनाया था। इस पीढ़ी के मजदूरों के लिए तो यह और भी जरूरी हो गया है कि डिपार्टमेंट-फैक्ट्री-एरिया-शहर-प्रान्त-देश-दुनिया के मजदूर पूंजीवाद के खिलाफ एकजुट संघर्ष की तरफ कदम बढ़ायें।

तीन साला एग्रीमेंट साइन करने वाले लीडरों से बिदके आटोपिन के वर्कर मैनेजमेंट से टक्कर लेने के लिए अगर किसी मसीहा की फिराक में पड़े तो वे फिर ठोकर खायेंगे। मजदूरों के अपने हित में यह जरूरी है कि वे बिचौलियों को ठुकरायें। वर्क लोड बढ़ाने के खिलाफ स्प्रिंग शॉप के वर्करों के संघर्ष में आटोपिन के समस्त मजदूरों का शामिल होना मैनेजमेंट के बढ़ते हमलों को रोकने के लिए जरूरी पहला कदम है। इसके लिए जनरल बाडी मीटिंग में संघर्ष समिति चुनकर, साइड मीटिंगों का सिलसिला शुरू करके और मजदूरों की आम सभा द्वारा फैसले का अधिकार अपने हाथ में रख कर ही आज की हालात में मजदूर मैनेजमेंट से टक्कर ले सकते हैं।

एक मजदूर का खत

ई एस आई में रिश्वतखोरी

मैं ईस्ट इंडिया कॉटन के पावरलूम में काम करता हूँ। मैं ई एस आई का मेम्बर भी हूँ। फैक्ट्री में काम करते समय 18-10-89 को एक्सीडैन्ट में मेरे दाहिने पैर को सख्त चोट लगी। ई एस आई अस्पताल के कैजुअलटी में मुझे ले जाया गया। एक्सीडैन्ट से मेरे पैर के अँगूठे का नाखुन निकल गया था। कैजुअलटी में पट्टी करके और दवाई देकर मुझे घर भेज दिया गया। अगले दिन मैं ईस्ट इंडिया डिस्पैन्सरी में एक्सीडैन्ट रिपोर्ट और क्लेम फार्म भरने गया। तब तक डाक्टर ने यह कह कर मेरे से 200 रुपये माँगे कि रिपोर्ट सीरियस लिख देगा और क्लेम में मुझे ज्यादा पैसे मिल जायेंगे। मैंने डाक्टर को पैसे देने से इनकार कर दिया। डाक्टर बहुत गुस्सा हो गया और बोला कि अब तुम्हें एक पैसा भी नहीं मिलेगा, रिपोर्ट गलत कर दूंगा।

मेरे पैर में चोट ज्यादा है। दूसरे हफ्ते मैं मेडिकल छुट्टी लेने गया तब डाक्टर ने हफ्ते की छुट्टी के लिए 40 रुपये माँगे। मैंने फिर पैसे देने से इनकार कर दिया। तब डाक्टर बोला कि बड़ी ई एस आई से लिखवा कर लाओ तब तुम्हें मेडिकल छुट्टी मिलेगी। डाक्टर ने मुझे समझाते हुये कहा कि 40 रुपये हफ्ता देने पर मुझे मेडिकल छुट्टी ईस्ट इंडिया डिस्पेंसरी से ही मिलती रहेगी। और दवाइयों का भी वह प्रबन्ध कर देगा। पैसा न देने पर मुझे कोई अच्छी दवाई भी नहीं मिलेगी। तब भी मैंने पैसे देने से इनकार कर दिया। डाक्टर ने गुस्सा होकर मुझे कहा कि अपनी दवाई बड़ी ई एस आई से कराओ।

इस सबकी शिकायत मैंने और कुछ साथियों ने 30-10-89 को ई एस आई के मेडिकल सुपरिन्टैनडैन्ट से की। उन्होंने कहा कि वे कुछ नहीं कर सकते और हमें सलाह दी कि पुलिस में शिकायत करके पकड़वाओ। —**रामधारी मौर्य**

लिखें !

स्वत्वाधिकारी व सम्पादक शेरसिंह द्वारा आटोपिन झुग्गी, फरीदाबाद से प्रकाशित व अशोक कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा, मानस प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-31 में मुद्रित।